बालमन कुछ कहता है

(मेरा नाम भी छप जाये)

पढ़ने वालो पढ़ो ध्यान से
छोटा सा ये किस्सा मेरा॥
एक कविता लिखने की आफत ने,
मुझको आ घेरा॥
रात दिवस मैं यही सोचता
कोई कविता बन जाये॥
एक बार खाटिली की पत्रिका में,
बस मेरा नाम छप जाये।
तैयार हुआ लिखने बैठा.
चैताया भावों को मैंने।
कितने ही कागज लिख डाले.
परन्तु पड़े लेने के देने॥
कठिन परिश्रम करने पर भी,
उदगार नही अभिव्यक्त हुये॥
हिन्दी सम्पादक के पास गया जब
सभी हौसले पस्त हुये॥
हाथ जोड़े विनती की उनसे,
बस एक दया मुझ पर कर देना।
कविता मेरी छपे न छपे,
नाम मेरा छपवा देना॥

नाम - शुभम मदुला
कक्षा - छठी
स्कूल - ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल

बालमन कुछ कहता है

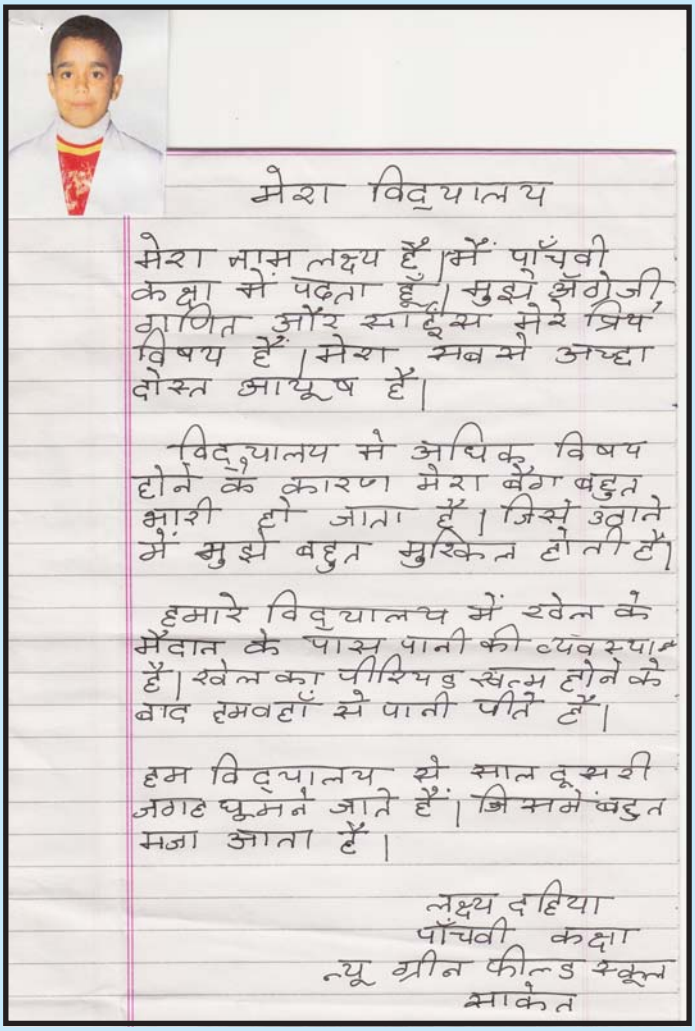

मेरा विद्यालय

मेरा नाम लक्ष्य है। मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे अँग्रेजी, गणित और साइंस मेरे प्रिय विषय हैं। मेरा सबसे अच्छा दोस्त आयूष है।

विद्यालय में अधिक विषय होने के कारण मेरा बैग बहुत भारी हो जाता है। जिसे उठाने में मुझे बहुत मुश्किल होती है।

हमारे विद्यालय में खेल के मैदान के पास पानी की व्यवस्था है। खेल का पीरियड खत्म होने के बाद हमलोग वहाँ से पानी पीते हैं।

हम विद्यालय से सात दूसरी जगह घूमने जाते हैं। जिसमें बहुत मजा आता है।

लक्ष्य दहिया
पाँचवी कक्षा
न्यू ग्रीन फील्ड स्कूल
साकेत

बालमन कुछ कहता है

मुझे चीटियाँ बीलकुल भी पसंद नही हैं कयोकी वो दूसरा के खाने मे घुस जाती हैं और पूछती भी नही । हैं

एकाग्रता

II A